CHETANA
International Journal of Education
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))

Impact Factor
SJIF 2022 = 6.261

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Research Paper

Received on 05.06.2022
Reviewed on 10.06.2022
Accepted on 12.06.2022

शिक्षक समाज का दर्पण

* श्रद्धा सिसोदिया
** डॉ. कपिलेश तिवारी

मुख्य शब्द - *जटिलता, चुनौतियाँ, दायित्व, विविधता, एकरूपता, दार्शनिक, पेशा, मानसिकता आदि*

सार–संक्षेप

शिक्षक को निर्बाध रूप से इन दायित्वों को भी निर्वहन करना होता है। स्कूली शिक्षा का समाज निर्माण में प्रमुख योगदान है। दार्शनिकों द्वारा स्कूल को एक लघु समाज के रूप में देखा गया है। औपचारिक शिक्षा में एक तरह की शक्ति है कि वह समाज को बनाने के लिये एक दृष्टि बच्चों में देता है और इस दृष्टि को देने में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान है इसलिये स्कूली शिक्षा को मात्र विषयगत अध्ययन तक सीमित करके देखना शिक्षा के लिये बेमानी है। शिक्षक के प्रयत्न कक्षा–कक्ष तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि विद्यालय की सम्पूर्णता के साथ हैं। सरकारी स्कूलों के अध्यापक, जिनके बारे में आमतौर पर नकारात्मक धारणा ही बनी दिखाई देती है, वस्तुतः इनमें से कई अभाव में प्रभाव दिखा रहे हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था वर्तमान में नकारात्मकता से ही जूझ रही है। कई बार तोयह नकारात्मकता चली जाती है और ऐसे में जरूरी हो नाउम्मीदी की हद तक जाता है उन लोगोंको सामने लाने का जो उस नाउम्मीदी में उम्मीद की किरण दिखाते हैं। दरअसल, नाउम्मीदी का वातावरण सा बन चुका है लेकिन यदि हम गौर से देखें तो इतनी भी नकारात्मक नहीं है तस्वीर।

प्रस्तावना

शिक्षा के सन्दर्भ खुलते ही जटिलताओं और चुनौतियों की कई परतें खुलती प्रतीत होती हैं। एक सरकारी स्कूल के अध्यापक के कार्य में कई तरह की जटिलतायें हैं और ये जटिलतायें कई स्तर पर हैं। यदि इन जटिलताओं को मोटे तौर पर देखें तो यह तीन प्रकार की हैं, पहली प्रकार की जटिलता वह है जो कि उसके पेशे से जुड़ी है और दूसरी प्रकार की जटिलता उस व्यवस्था में है जिसका वह हिस्सा है। इसमें एक तीसरी प्रकार की जटिलता का ताल्लुक शिक्षक के व्यक्तिगत जीवन से है लेकिन यहां पर हम मोटे तौर पहली दो जटिलताओं पर ही बात रखते हैं। पेशे से जुड़ी जटिलता को देखें तो शिक्षक एक स्कूल का हिस्सा है और उसके हिस्से में समुदाय व उसके बच्चे हैं। समुदाय में भी एकरूपता नहीं है और इसमें भी विविधता है। कक्षा में सीखने के लिये आये बच्चों में विविधता है। यह विविधता बच्चों की अलग–अलग सीखने की गति से लेकर उनके व्यवहार तक की है। शिक्षक को पेशे से जुड़ी इन जटिलताओं के साथ अपना काम करना होता है। शिक्षक एक व्यवस्था का भी हिस्सा है और उस व्यवस्था के कई काम शिक्षक के जिम्मे आते हैं। शिक्षक को निर्बाध रूप से इन दायित्वों को भी निर्वहन करना होता है। स्कूली

शिक्षा का समाज निर्माण में प्रमुख योगदान है। दार्शनिकों द्वारा स्कूल को एक लघु समाज के रूप में देखा गया है। औपचारिक शिक्षा में एक तरह की शक्ति है कि वह समाज को बनाने के लिये एक दृष्टि बच्चों में देता है और इस दृष्टि को देने में शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान है इसलिये स्कूली शिक्षा को मात्र विषयगत अध्ययन तक सीमित करके देखना शिक्षा के लिये बेमानी है। शिक्षक के प्रयत्न कक्षा–कक्ष तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि विद्यालय की सम्पूर्णता के साथ हैं।

सरकारी स्कूलों के अध्यापक, जिनके बारे में आमतौर पर नकारात्मक धारणा ही बनी दिखाई देती है, वस्तुतः इनमें से कई अभाव में प्रभाव दिखा रहे हैं। सरकारी शिक्षा व्यवस्था वर्तमान में नकारात्मकता से ही जूझ रही है। कई बार तोयह नकारात्मकता चली जाती है और ऐसे में जरूरी हो नाउम्मीदी की हद तक जाता है उन लोगोंको सामने लाने का जो उस नाउम्मीदी में उम्मीद की किरण दिखाते हैं। दरअसल, नाउम्मीदी का वातावरण सा बन चुका है लेकिन यदि हम गौर से देखें तो इतनी भी नकारात्मक नहीं है तस्वीर। सरकारी शिक्षा व्यवस्था एक बड़ी व्यवस्था है और इस बात से इनकार नहीं है कि इस व्यवस्था में सभी ऐसे लोग नहीं होंगे जो कि उम्मीद दिलाते हों लेकिन जब हम इस व्यवस्था को करीब से देखते हैं तो ऐसा उम्मीद से भरे, हर दिन कुछ नया करने को उत्सुक शिक्षक साथियों की कमी भी नहीं दिखती। उम्मीद जगाते शिक्षक एक ऐसा ही प्रयास है जो कि ऐसी ही हकीकत को सामने लाने का प्रयास करता है।

शिक्षक समाज में उच्च आदर्श स्थापित करने वाला व्यक्तित्व होता है। किसी भी देश या समाज के निर्माण में शिक्षा की अहम् भूमिका होती है, कहा जाए तो शिक्षक समाज का आइना होता है। हिन्दू धर्म में शिक्षक के लिए कहा गया है कि आचार्य देवो भवः यानी कि शिक्षक या आचार्य ईश्वर के समान होता है। यह दर्जा एक शिक्षक को उसके द्वारा समाज में दिए गए योगदानों के बदले स्वरुप दिया जाता है। शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूज्यनीय रहा है। कोई उसे गुरु कहता है, कोई शिक्षक कहता है, कोई आचार्य कहता है, तो कोई अध्यापक या टीचर कहता है ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनो में कहा जाये तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढता है। और शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता रहता है, तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है ।

माता-पिता बच्चे को जन्म देते हैं। उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नही उतार सकते, लेकिन एक शिक्षक ही है जिसे हमारी भारतीय संस्कृति में माता-पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है। क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है। इसलिये ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है। गुरु या शिक्षक का संबंध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है और असका हाथ थामने के लिए हमेशा तैयार रहता है। विद्यार्थी के मन में उमडे हर सवाल का जवाव देता है और विद्यार्थी को सही सुझाव देता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करता है ।

एक शिक्षक या गुरु द्वारा अपने विद्यार्थी को स्कूल में जो सिखाया जाता हैं या जैसा वो सीखता है वे वैसा ही व्यवहार करते हैं। उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बन जाती है जैसा वह अपने आसपास होता देखते हैं। इसलिए एक शिक्षक या गुरु ही अपने विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है जो हमें गुरु द्वारा प्रदान की जाती है। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है यहाँ पर शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ-साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देते हैं, जो कि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। जब अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश का राष्ट्रपति आता है तो वो भारत की गुणवत्तायुक्त शिक्षा की तारीफ करता है ।

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी है तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहाँ की प्रतिभा दब कर रह जायेगी बेशक किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो, लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं, जो किसी भी देश के विकास में शिक्षा के महत्व को अधोरेखांकित करते हैं। वास्तविक रूप में ज्ञान ही शिक्षा का आशय है, ज्ञान का आकांक्षी है- विद्यार्थी और इसे उपलब्ध कराता है शिक्षक एक शिक्षक द्वारा दी गयी शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। प्राचीन काल से आज पर्यन्त शिक्षा की प्रासंगिकता एवं महत्ता का मानव जीवन में विशेष महत्व है। शिक्षकों द्वारा प्रारंभ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहारकुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श मानव समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ-साथ ऐसे भी शिक्षक हैं जो शिक्षक और शिक्षा के नाम को कलंकित कर रहे हैं, और ऐसे शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है, जिससे एक निर्धन शिक्षार्थी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है और धन के अभाव से अपनी पढाई छोडनी पडती है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला सिखाता है ।

आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती हैं। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नहीं थी। इससे छात्रों को बडी कठिनाई का सामना करना पड रहा है। शिक्षक ही भारत देश को शिक्षा के व्यवसायीकरण और बाजारीकरण से स्वतंत्र कर सकते हैं। देश के शिक्षक ही पथ प्रदर्शक बनकर भारत में शिक्षा जगत को नई बुलंदियों पर ले जा सकते हैं । गुरु एवं शिक्षक ही वो हैं जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करतें हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता क्योंकि वह ना सिर्फ हमको सही आदर्श मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है । किसी भी देश या राष्ट्र के विकास में एक शिक्षक द्वारा अपने शिक्षार्थी को दी गयी शिक्षा और शैक्षिक विकास की भूमिका का अत्यन्त महत्व है । आज शिक्षक दिवस है, आज का दिन गुरुओं और शिक्षकों को अपने जीवन में उच्च आदर्श जीवन मूल्यों को स्थापित कर आदर्श शिक्षक और एक आदर्श गुरु बनने की प्रेरणा देता है ।

शिक्षक की समाज में भूमिका

समाज में शिक्षक एक दर्पण का कार्य करता है क्योंकि शिक्षक ही छात्र की नीव तैयार करता है साथ ही हरसंभव उसके अच्छे चरित्र एवं समाज के प्रति उसके व्यवहार के लिए उनके भविष्य का ढांचा तैयार करता है |समाज में शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है अतः पुरातन गुरु शिष्य परम्परा में गुरु का स्थान सदैव परमात्मा के समकक्ष माना जाता है |

सारांश

शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति समाज और संगठन में अपनी पहचान बना सकता है। शिक्षक ही शिक्षा के द्वारा प्रगति करते हुए समाज में सकारात्मक परिवर्तन करवाने में अहम भूमिका निभा सकते है। साथ ही शिक्षक तो समाज का दर्पण है।

शिक्षक ही एक सच्चा देशभक्त नागरिक तैयार कर सकता है। प्रशिक्षण ही हमें जीवन में आगे बढ़ाता है । यदि एक शिक्षक विचलित होता है तो समाज की बहुत बड़ी हानि होती है। शिक्षक का लक्ष्य निश्चित होना चाहिए।

संदर्भ-ग्रंथ सूची

- Ministry of Education, Govt. of India , New Delhi.
- Radha Krishna, S. (1949)(Chairman) University Education Commission, (1948-49)
- Ministry of Education, Govt. of India, New Delhi
- Indian Journal of Teacher Education, Anweshika.
- Social Psychology – Arun Kumar

Corresponding Author

* **श्रद्धा सिसोदिया** पी.एच.डी, शोधार्थी

** **डॉ कपिलेश तिवारी,** मार्गदर्शक एवं प्रोफेसर

शिक्षा संकाय, पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

E-Mail-papsa2611@gmail.com, Mob- 9672749826